• पितृपक्ष में...

खरीददारी

पितृपक्ष में पितरों की आत्मा की मुक्ति के लिए तर्पण किया जाता है। पितृपक्ष में किसी भी सांसरिक कार्य की मनाही होती है। जैसे, शादी, मुंडन, गृह प्रवेश और नामकरण जैसे मांगलिक कार्य नहीं किए जाते। इसके साथ ही पितृपक्ष में खरीदारी करने को भी शुभ नहीं माना जाता। पितृपक्ष के दौरान नए कपड़े, आभूषण, संपत्ति, जमीन, वाहन, घर आदि खरीदना वर्जित माना जाता है लेकिन ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पितृपक्ष में भी ऐसा संयोग बनता है, जब आप खरीदारी कर सकते हैं। आइए, जानते हैं इस साल पितृपक्ष में आप किस-किस दिन खरीदारी कर सकते हैं।

▶ पितृपक्ष में खरीदारी करने के पीछे सभी के अपने-अपने तर्क होते हैं। कुछ लोग मानते हैं कि पितृपक्ष के 15 दिन पितरों के नाम होते हैं, इसलिए इन दिनों में पितरों का तर्पण, श्राद्ध और उनकी स्तुति करनी चाहिए। जिससे कि हमारे पितरों को पता चल सके कि हमारे जीवन में उनका कितना महत्व है। सांसरिक चीजों में लगे रहने से हम पितरों का सही तरीके से मान-सम्मान या तर्पण नहीं कर पाते, इसलिए पितृपक्ष में नई चीजें न खरीदकर पूरा समय

उनके लिए समर्पित किया जाता है।

▶ आपका मन अगर पितृपक्ष में किसी चीज की खरीदारी करने का है, तो आप पितृपक्ष में 23, 26 सितंबर और 2 अक्टूबर को खरीदारी कर सकते हैं। 23 सितंबर को सर्वार्थ सिद्धि योग बन रहा है, जबकि 26 सितंबर को गुरुपुष्य योग का निर्माण हो रहा है लेकिन ध्यान रखने वाली बात यह है कि 26 सितंबर को खरीदारी का मुहूर्त रात्रि 11:30 बजे के बाद है, इसका अर्थ यह है कि अगला दिन शुरू होने से पहले आपको कम समय में ही खरीदारी करनी होगी। वहीं, 2 अक्टूबर को फिर से सर्वार्थ सिद्धि योग बनेगा। पितृपक्ष में इन तीनों ही दिनों में आप नई चीजों की खरीदारी कर सकते हैं।

▶ सर्वार्थ सिद्धि योग को इसलिए विशेष माना जाता है क्योंकि जब क्रय-विक्रय, यात्रा, आभूषण की खरीदारी सम्भव न हो, तो सर्वार्थ सिद्धि योग में इन कार्यों को किया जा सकता है, इसलिए पितृपक्ष में सर्वार्थ सिद्धि योग बनने से खरीदारी की जा सकती है। वहीं, गुरु पुष्य योग में इस दिन किए गए कार्यों में सफलता और शुभता की संभावना बढ़ जाती है। गुरु पुष्य योग में सोना, नया घर खरीदना या किसी भी अन्य चीज की खरीदारी शुभ मानी जाती है।

• श्राद्ध तर्पण...

पितृपक्ष में उपाय

पितृपक्ष के दिनों की शुरुआत हो चुकी है। पितरों का आशीर्वाद पाने के लिए पितृ पक्ष का विशेष महत्व है। दरअसल, इन सभी 15 दिनों के लिए पितर धरती लोक पर वास करते हैं। ऐसे में आप उनके नाम से श्राद्ध तर्पण आदि करके उन्हें प्रसन्न कर सकते हैं।

लेकिन, क्या आप जानते हैं पितृपक्ष में तुलसी से जुड़े कुछ आसान और सरल उपाय करने से आपके पितर आपसे प्रसन्न होंगे। साथ ही आप पर मां लक्ष्मी की कृपा भी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होने के साथ ही आपको ऋण से भी मुक्ति मिलेगी। आइए जानते हैं पितृपक्ष में तुलसी के चमत्कारी उपाय।

⏩ सबसे पहले आपको बता दें कि पितृ पक्ष का आरंभ 17 सितंबर से हो चुका है और 2 अक्टूबर को पितृपक्ष समाप्त होगा। तुलसी के पौधे को सबसे पवित्र पौधा माना गया है। श्राद्ध पक्ष के दिनों में पितरों की कृपा पाने के लिए आप उनके लिए जो भी भोजन बनाए उसमें तुलसी दल जरूर डालें। यह छोटा सा उपाय आपके लिए बेहद लाभकारी साबित होगा। ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि, तुलसी को मिलने से भोजन में पवित्रता आती है।

⏩ धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, जिस दिन पितरों को श्राद्ध करें उस दिन तुलसी के पेड़ की जड़ निकालकर एक कटोरे में रख लें। इसके बाद अपने दाएं हाथ के अंगूठे से उस जड़ पर सात पर अपने पूर्वजों को याद करते हुए जल अर्पित करें। इसके बाद उस जल को अपने घर के सभी हिस्सों में छिड़क दें। जो पानी बच जाए उसे तुलसी के पौधे में डाल दें।

⏩ पितृपक्ष में किसी भी दिन आप चाहें तो तुलसी की माला भी धारण कर सकते हैं। लेकिन, ऐसे करने के साथ ही आपको तुलसी की माला से जुड़े नियमों का पालन करना होगा। साथ ही तुलसी के पौधे की अच्छी से देखभाल करें और तुलसी का पूजन पूरे विधि विधान के साथ करें। ऐसे करने से आपके पितर आपसे प्रसन्न होंगे और मां लक्ष्मी का वास भी आपके घर में होगा।

⏩ पितृ पक्ष में किसी भी शुक्रवार के दिन तुलसी के पौधे को चंदन अर्पित करना चाहिए। ऐसे करने से आपको मां लक्ष्मी का आशीर्वाद प्राप्त होगा। चंदन से तुलसी के गमले पर स्वास्तिक भी बनाएं और इसके बाद घी का दीपक जरूर जलाएं।

⏩ पितृ पक्ष के किसी भी सोमवार, मंगलवार या बुधवार के दिन तुलसी का पूजन कपूर के साथ करें। दरअसल, पितरों के तर्पण आदि के लिए इन तीन दिनों का विशेष महत्व है। इसलिए इस दिन पहले तर्पण करके फिर तुलसी के पास कपूर एक दिए में रखकर जला दें। ऐसा करने से आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

⏩ यदि आपको बार बार सभी कामों में असफलता मिलती जा रही है तो तुलसी की जड़ निकाले और फिर उसे अच्छे से साफ करके उसका पूजन करें। इसके बाद इस जड़ को किसी पीले रंग के कपड़े में बांध लें और इस कपड़े को अपने पर्स में रख लें।

पिंडदान क्यों और कैसे किया जाता है

पिंडदान मुख्य रूप से किसी की मृत्यु के बाद, श्राद्ध पक्ष, अमावस्या, या पवित्र स्थलों जैसे गया, वाराणसी, प्रयाग आदि में किया जाता है। इस अनुष्ठान में 'पिंड' (गोलाकार चावल के लड्डू) अर्पित किए जाते हैं, जो मृतक की आत्मा का प्रतीक माने जाते हैं।

हिंदू धर्म में माता-पिता का ऋण बहुत बड़ा माना जाता है। मान्यता है कि पिंडदान करने से यह ऋण उतरता है और व्यक्ति को पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है...

पिंडदान हिंदू धर्म में पूर्वजों की आत्मा की शांति और मोक्ष के लिए किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण धार्मिक अनुष्ठान होता है। इसका उद्देश्य पितरों की आत्मा को तृप्त करना और उन्हें सुख और मोक्ष प्रदान करना होता है। पिंडदान मुख्य रूप से किसी की मृत्यु के बाद, श्राद्ध पक्ष, अमावस्या, या पवित्र स्थलों जैसे गया, वाराणसी, प्रयाग आदि में किया जाता है। इस अनुष्ठान में 'पिंड' (गोलाकार चावल के लड्डू) अर्पित किए जाते हैं, जो मृतक की आत्मा का प्रतीक माने जाते हैं।

हिंदू धर्म में माता-पिता का ऋण बहुत बड़ा माना जाता है। मान्यता है कि पिंडदान करने से यह ऋण उतरता है और व्यक्ति को पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।

● **आत्मा की शांति के लिए**-मान्यता है कि पिंडदान करने से मृतक की आत्मा को शांति मिलती है और वह अगले जन्म के लिए मुक्त हो जाती है।

● **मोक्ष की प्राप्ति**-ये भी माना जाता है कि पिंडदान करने से मृत पूर्वजों की आत्मा को मोक्ष की प्राप्ति होती है, और वह सभी सुखों से परिपूर्ण हो जाती है।

● **पितृदोष निवारण के लिए**-मान्यता है कि यदि किसी व्यक्ति की कुंडली मे पितृदोष है, तो पिंडदान करने से यह दोष दूर हो जाता है।

● **पुण्य प्राप्ति के लिए**-मान्यता है कि पिंडदान करने से व्यक्ति को पुण्य की प्राप्ति होती है और उसके जीवन में सुख-समृद्धि और खुशहाली आती है।

● **कुल कल्याण के लिए**- कुल की रक्षा और कल्याण के लिए भी पिंडदान किया जाता है। मान्यता है की पिंडदान करने से पितृ प्रसन्न होते हैं और आशीर्वाद देते हैं, जिससे कुल का कल्याण होता है।

● **वंश वृद्धि**- पिंडदान से वंश में वृद्धि होती है और जीवन में समृद्धि आती है। परिवार में कोई बाधा या अशांति नहीं रहती।

● **पिंडदान कैसे किया जाता है**-पिंडदान करने के लिए सबसे पहले पिंड चावल, जौ का आटा, तिल, दूध और घी से पिंड बनाए जाते हैं. इन पिंडों का रूप गोलाकार होता है, जो जीवन और मृत्यु के चक्र का प्रतीक होता है। पिंडदान से पहले श्राद्ध कर्म किया जाता है, जिसमें पंडित द्वारा विधिवत रूप से मंत्रोच्चार और हवन किया जाता है। इसके माध्यम से पितरों को आह्वान किया जाता है। पिंडदान के दौरान ये पिंड जल, कुशा, और तिल के साथ पवित्र स्थान पर अर्पित किए जाते हैं।

● ऐसा माना जाता है कि ये पिंड पितरों तक पहुंचते हैं और उनकी आत्मा को तृप्ति मिलती है। पिंडदान के साथ तर्पण भी किया जाता है, जल और काले तिल का तर्पण पितरों की आत्मा की शांति के लिए किया जाता है। पिंडदान के बाद ब्राह्मणों को भोजन कराना और दान देना भी अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। इसमें अन्न, वस्त्र, और दक्षिणा का दान करने की परंपरा है।

● **गरुड़ पुराण में पिंडदान का महत्व**-गरुड़ पुराण में पिंडदान का विशेष उल्लेख मिलता है। गरुड़ पुराण के अनुसार, अच्छे या बुरे कर्मों के आधार पर पिंडदान करने से मृत आत्मा को स्वर्ग या नरक की प्राप्ति होती है और वह पितृलोक में शांति प्राप्त करती है। इसे करने से मृतक की आत्मा की तृप्ति होती है और उनके जन्म-मरण के चक्र से मुक्त होने की संभावना भी बढ़ जाती है। हिंदू धर्म में पिंडदान को पितरों के लिए सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण दान माना जाता है। पिंडदान करने से 'पितृ ऋण' से भी मुक्ति मिलती है।

● गरुड़ पुराण के अनुसार, जब किसी व्यक्ति की मृत्यु होती है, तो उसकी आत्मा यमलोक की यात्रा करती है और इस दौरान उसे बहुत कष्टों का सामना करना पड़ता है। पिंडदान और श्राद्ध के माध्यम से आत्मा को इस कष्ट से मुक्ति मिलती है और उसे मोक्ष की ओर बढ़ने में सहायता मिलती है। गरुड़ पुराण के मुताबिक, आत्मा को पुर्नजन्म में 40 दिन का समय लगता है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• शुभ है...

श्री यंत्र

जीवन में सुख-समृद्धि और संपत्ति पाने के लिए हर व्यक्ति कठोर परिश्रम और मेहनत करता है, लेकिन फिर भी कुछ कारणों से की हुई मेहनत का सही फल नहीं मिल पाता। हिंदू धर्म शास्त्रों में धन संपत्ति अर्जित करने के कई उपाय बताए गए हैं। उन्हीं में से एक है श्री यंत्र, श्री यंत्र धन की देवी माता लक्ष्मी को माना जाता है। माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने का सबसे उत्तम उपाय श्री यंत्र ही है। ऐसा माना जाता है कि श्री यंत्र की सच्चे मन से पूजा करने से माता लक्ष्मी की विशेष कृपा प्राप्त होती है। स्फटिक को श्री यंत्र माता लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए सबसे उत्तम माना गया है, इसलिए लोग अपने घरों में श्री यंत्र की स्थापना और उसकी पूजा करते हैं। हालांकि, श्री यंत्र को स्थापित करने से पहले कुछ नियमों का पालन करना बेहद जरूरी है। ऐसा माना जाता है कि इन नियमों का पालन ना करने से श्री यंत्र की पूजा का फल प्राप्त नहीं होता।

• घी का एक दीपक...

वास्तु शास्त्र के अनुसार, घर के मंदिर में गाय के घी का एक दीपक नियमित रूप से जलाएं और घंटी भी बजाएं। ऐसा करने से सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जा घर से बाहर निकलती है। ठीक इसी तरह घर में शंख रखने और बजाने से हमारे घर का वास्तु दूर होता है। घर की पूजा स्थल में देवी देवतों पर चढ़ाए गए फूल दूसरे दिन हटा देने चाहिए और भगवान को नए फूल अर्पित करने चाहिए। इसी तरह पूजा घर में देवताओं के चित्र भूलकर भी आमने-सामने नहीं रखना चाहिए।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित